जीवन में सबसे खतरनाक चीज़ है निराशा

ईश्वरीय विद्यार्थी जीवन का प्रमुख विषय है 'योग'। योग का अभ्यास करना, ये हमारे पुरुषार्थ का प्रमुख हिस्सा है। क्योंकि हमारा यह जीवन पुरुषार्थी जीवन है। बाबा(परमात्मा) इसको रेस कहते हैं। कई दफ़ा तो बाबा यह भी कहते हैं कि यह अश्व दौड़(हॉर्स रेस) है। हम सभी इस रेस में शामिल हैं। कोई आगे बढ़ रहा है, कोई धीरे चल रहा है। हर एक के पुरुषार्थ की अपनी डिग्री है। और उससे जो प्राप्ति है वो अलग-अलग है। सब चाहते तो यही हैं कि अपनी सम्पूर्ण स्टेज को प्राप्त करें। हम सब चाहते हैं कि हम 36 दैवीगुण धारण करें। हम सब से आगे निकलें। ये भी जानते हैं कि ये समय बार-बार नहीं मिलता। सिवाय संगम के ये संभव भी नहीं है। लेकिन हम इस बात को भूल जाते हैं। हमारी बुद्धि पर पर्दा पड़ जाता है। इस बात को समझते हुए, इस महत्त्व को जानते हुए भी हम ढ़ीले क्यों हो जाते हैं, जितना ध्यान देना चाहिए, जितनी कोशिश हमें करनी चाहिए, वो क्यों नहीं करते! जब इतनी जबरदस्त प्राप्ति है, यह हमारी समझ में आ गया है, फिर गफलत

ब्र.कु. गंगाधर

क्यों करते हैं, क्या कारण है इसका? आपने कभी सोचा! परमात्म-महावाक्यों में बहुत दफा परमात्मा बताते हैं कि इसका क्या-क्या कारण है।

जब अपने पर ध्यान जाता है, गौर करते हैं तो उस निष्कर्ष बिंदु पर अवश्य पहुंचते हैं कि जन्म-जन्मांतर के विकर्मों का बोझ हमारे ऊपर चढ़ा हुआ है। आत्मा के ऊपर खराब संस्कार पड़ गये हैं, वे मन को इधर-उधर ले जाते हैं। पहले ये कर दूं या वह कर दूं, इस तरह मनुष्य आना-कानी करता है, गफलत करता है, पूर्ण ध्यान देता नहीं है, फिर हट जाता है। क्यों हट जाता है, क्योंकि कई दफा वह निराश हो जाता है। जीवन में सबसे खतरनाक चीज़ है, तो वो है निराशा। यह पुरुषार्थी जीवन में बहुत बड़ा विघ्न उत्पन्न करती है। अरे, छोड़ो भाई, सम्पूर्ण पवित्र बनना तो हमारे वश की बात नहीं है। हम पूर्ण पवित्र बन नहीं सकते। जितना बन जायेंगे, उतना बन जायेंगे। अरे भाई, यह क्या है, नींद छोड़कर, आराम छोड़कर रोज़ सुबह-सुबह जल्दी उठो, योग करो, यह हमारे से नहीं हो सकता। अरे, हम जैसे गृहस्थियों को सहज थोड़े ही है। छोड़ो इसको, क्या झंझट है। इस प्रकार निराश हो जाते हैं। बाबा ने कहा है कि यह ज्ञान मार्ग बहुत सहज है। बाबा भी नहीं चाहते कि बच्चे मुश्किल में पड़ें, मेहनत करें, लेकिन हमें मुश्किल लगता है। क्यों मुश्किल लगता है, क्योंकि हमें अमृतवेले अनुभव नहीं होता। होता है तो कभी-कभी होता है। और बहुत कम समय तक होता है। मन ज़्यादा समय टिका नहीं, लाभ कुछ हुआ नहीं, नींद भी गंवाई और योग भी नहीं किया। अरे, आराम से सो भाई! योग तो बाद में भी लग सकता है। किसने कहा कि सुबह साढ़े तीन बजे योग लगता है! अमृतवेला यही है क्या! पूरा संगमयुग ही अमृतवेला है। कभी भी योग करो, उसमें क्या। योग तो किसी समय पर भी लग सकता है। आदमी अपने आप वकील और जज बनकर अपने आप को समझाने लगता है, गलत तरीके से। समझता तो यही है कि अपना भला सोच रहा हूँ, लेकिन गलत सोच लेता है। ऐसा क्यों सोच लेता है, क्योंकि निराशा होती है। निराशा क्यों होती है, क्योंकि कोई प्राप्ति नहीं होती उसको। अगर कोई व्यापारी है, दिनभर मेहनत करने के बाद भी उसको कुछ फायदा नहीं होता है, तो सोचेगा कि इसमें क्या रखा है। समेट लो इस धंधे को, इसमें नुकसान ही नुकसान है, प्राप्ति तो कुछ है ही नहीं। मन में निराशा उत्पन्न होने से आदमी में उत्साह कम हो जाता है। निराश होना उस व्यक्ति की पहली हार है। उसकी इच्छाशक्ति को कमज़ोर करती है। वह हार मान लेता है, कहना शुरु करता है कि छोड़ो भाई, जो होगा सो होगा। इससे वह इतनी ऊँची प्राप्ति नहीं कर सकता। ऐसे मन में आने वाले विचार अगर हैं तो समझ लो कि निराशा ने मुझे घेर लिया है।

यही अमूल्य घड़िया हैं आत्मा को आयरन से रीयल गोल्ड बनाने की

जब हम यही पहला लेसन पक्का करते कि मैं आत्मा हूँ ही इन इन्द्रियों से परे। आत्मा है ही आनन्द स्वरूप, प्रेम स्वरूप। इसी में ही हम स्थित होते जाएं तो आत्मा है ही गोल्ड। देह समझने से आत्मा आयरन हो गई है। यही अमूल्य घड़ियां हैं जिसमें आयरन एजड आत्मा को एक धक से, संकल्प से सेकण्ड में सोना बना सकते। इसलिए कहते लोहा गर्म हो तो एक धक हथौड़ा लगाओ और मोल्ड हो जाता। तो अभी हम आत्मा भी बिल्कुल तमोप्रधान गर्म लोहा हो गई हैं। बाबा ने एक ही धक लगाकर मोड़ दिया। बाबा ने योग अग्नि में मुझ लोहे स्वरूप आत्मा को पिघला दिया और सब संस्कार खत्म कर सुन्दर आत्मा बना दिया। बाबा ने कहा तुम मेरी हो माना मैं सोना बन गई।

जब कहा तुम मेरी हो तो देह और देह के सब सम्बन्ध खत्म हो गये। यह हक बाबा ने तब लगाया जब आत्मा बिल्कुल गर्म आयरन हो गई। तो मोड कर गोल्ड बना दिया। बाबा ने गोल्ड बनाया फिर लोहा क्यों बनते? फिर क्यों कहते कि मुझे थोड़ी-थोड़ी देह की आकर्षण होती। आप मुये मर गई दुनिया। हमारा प्राणों का प्राण, जान का जिगर एक बाबा है, हमारा बाबा के सिवाए है ही कौन। वही हमारा बाबा है जिसको दुनिया नहीं जानती। हमने अपने बाबा को पाया बाकी कौन-सा सुख चाहिए! कौन-सी सम्पत्ति चाहिए? कौन-सा परिवार चाहिए! एक में सब आ जाता, तो मैं किसके साथ बुद्धि लगाऊं। एक संकल्प करो तो सब खत्म हो जाता। घर चले जाओ, नीचे

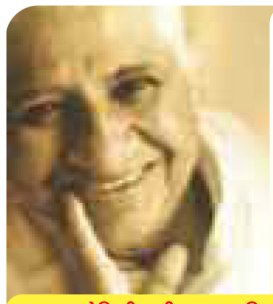
राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हमारा प्राणों का प्राण, जान का जिगर एक बाबा है, हमारा बाबा के सिवाए है ही कौन। वही हमारा बाबा है जिसको दुनिया नहीं जानती। हमने अपने बाबा को पाया बाकी कौन-सा सुख चाहिए! कौन-सी सम्पत्ति चाहिए? कौन-सा परिवार चाहिए! एक में सब आ जाता।

क्यों आते। मेरे संस्कार हैं -यह कौन कहता? मैं हूँ ही सच्चा जेवर। फिर कहकरके अपने को आर्टीफिशियल जेवर क्यों बनाते? कई कहते हैं मुझे शान्ति की अनुभूति ही नहीं होती। मैं कौन हूँ? जब कहते मुझे खुशी की, शान्ति की अनुभूति नहीं होती तो मैं किसकी हुई? रावण की या बाप की? रावण का ठिकाना ही नहीं, उसका गुण है अशान्ति फैलाना, झगड़ा कराना। बाबा का गुण है शान्ति, प्रेम। आपकी वह प्रॉपर्टी है, आप उस प्रॉपर्टी को त्याग दूसरे की प्रॉपर्टी क्यों लेते। हमारा संस्कार है कि हम एक बाप की सन्तान हैं फिर हमसे कौन-सा विकर्म होगा! कहाँ मेरी वृत्ति-दृष्टि जायेगी! वृत्ति में है हम सब एक बाबा के बच्चे हैं। बाबा ने ब्रह्मा का भी फोटो नहीं रखने दिया, फिर हम दूसरों को कैसे याद कर सकते!

बाबा ने जन्म से ही हमारा सबकुछ परिवर्तन कर दिया। पहले हम कभी 4 बजे उठते थे क्या? तो बाबा ने पहले तो निन्द्रा को परिवर्तन किया। गॉडली स्टूडेंट कह हमारी पढ़ाई को परिवर्तन कर दिया। ड्रेस बदल दी, भोजन बदल दिया, क्या कभी दिल होती है कि मैं होटल में जाकर खाऊं। क्या ऐसा कभी संकल्प उठता कि आज अच्छी पिक्चर आई है, ज़रा देखकर आऊं। आज अच्छा श्रृंगार कर शादी में तो जाऊं। ऐसा संकल्प भी उठता है? या ऐसा कभी संकल्प उठता, दुनिया वालों की तरह रमी(ताश) खेलें। तो यह सब बाबा ने जन्म लेते ही परिवर्तन कर दिया है ना! जन्म होते ही तन-मन-धन सब परिवर्तन हो गया। बाकी क्या परिवर्तन करना है?

सर्विस में फिर यह विघ्न आता, कहते यह अच्छी सर्विस करती, यह नहीं करती। इस बहन को चांस मिलता हमें नहीं मिलता। इसका सेंटर बहुत अच्छा है, मेरा नहीं, लेकिन मैं पूछती कौन-सा एग्रीमेंट में मिला कि यह तेरा सेन्टर है? कहते मेरी तो रूचि नहीं होती। मेरी दिल नहीं होती, यह सब तब तक है जब तक अपनी स्व स्थिति में स्थित होने का अनुभव नहीं है। बाबा की यादों में खो जाओ तो बाकी क्या चाहिए।

श्रीमत पर ट्रस्टी बनकर चलते रहो तो बेफिक्र बादशाह की तरह रहेंगे

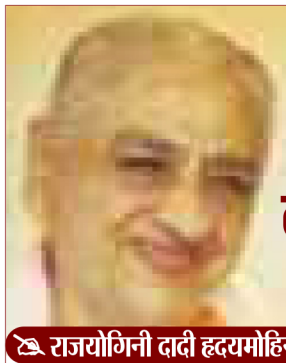
राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

जब यह निश्चय कर लेते हैं कि बाबा ही हमारा संसार है तो और कोई चीज़ रही नहीं। अगर आप प्रवृत्ति में भी रहे हुए हैं तो बाबा के डायरेक्शन से रहे हुए हैं, तो आप कभी भी प्रवृत्ति में रहते, प्रवृत्ति के वश नहीं होंगे क्योंकि बाबा के डायरेक्शन से रहे हुए हैं, तो हमको खिलाने वाला बाबा है, चाहे अपना धन्धा करते हो, नौकरी करते हो, उससे पैसा आता है, लेकिन दिलाने वाला कौन? हम तो अभी ट्रस्टी हो गये ना। जो भी प्रवृत्ति वाले बैठे हैं वो सब अपने को ट्रस्टी समझते हैं? पक्का! अगर ट्रस्टी हैं तो बहुत मौज में रहेंगे क्योंकि ज़िम्मेवार बाबा है, जिसने ट्रस्टी बनाया है। बाबा की श्रीमत पर ट्रस्टी बन चलते रहो तो सदा बेफिक्र बादशाह की तरह रहेंगे। तो जो बाबा के पक्के ट्रस्टी बच्चे हैं उन्हों के लिए गैरन्टी है, कभी भी बाबा का बच्चा भूख नहीं मर सकता है। वो भूखा हो ही नहीं सकता है, अन्त तक दाल-रोटी ज़रूर मिलेगी। उसके लिए बाबा बंधा हुआ है। नाम भल प्रवृत्ति है लेकिन रहना है पर वृत्ति में माना न्यारा और प्यारा होके। ट्रस्टी माना ज़िम्मेवार दूसरा है। तो प्रवृत्ति में रहना माना पर वृत्ति में रहना, यह मानकर चल रहे हैं तो बाबा की गैरन्टी है।

अभी एक जन्म बाबा के बने तो 21 जन्म के लिए भगवान की गैरन्टी है कि आपको कभी दुःख अशान्ति का नाम निशान ही नहीं आयेगा, इतनी गैरन्टी कोई दे सकता है? बच्चा माना बाप के सिवाए और कुछ नहीं। उसका आधार है श्रीमत। श्रीमत कितनी अच्छी है, सवेरे उठने से लेकर रात को सोने तक श्रीमत हर कदम की मिली हुई है। एक है सोचना -यह करूँ या न करूँ, ऐसे करूँ या वैसे करूँ, ये तो बाबा कहता है कदम पर कदम रखो, श्रीमत दे दिया है, कदम बनाके दे दिया है, सुबह को ऐसे उठो, रात को ऐसे सोओ, दिन में ऐसे कामकाज करो, इस तरह से रास्ता बनाके दिया है, उस पर चलना है बस। सोचना नहीं है। रास्ता ठीक है या नहीं ठीक है, मंज़िल पर पहुँचूँगा नहीं पहुँचूँगा, रास्ता ठीक है तब तो ब्रह्मा बाबा मंज़िल पर पहुंच गये ना! तो बस उसी पर पाँव रखो यानी जो बाबा ने किया है वो करो, बस। कोई भी संकल्प आता है तो सिर्फ टेली करो(मिलाओ) कि बाबा का यह संकल्प था, बाबा के यह बोल, यह कर्म थे? कॉपी करना है बाबा को और किसी को नहीं। फॉलो ब्रदर, फॉलो सिस्टर नहीं कहा जाता है, फॉलो फादर कहा जाता है। तो कितना सहज बाबा ने करके दिया है इसलिए बाबा कहते हैं आपको मेहनत ही क्या है? इसके आगे आकाश भी कुछ नहीं है, सागर भी कुछ नहीं है, इतना हमारा बाबा से प्यार है, बाबा का हमारे से है। जिससे प्यार होता है उसको याद करने की आवश्यकता नहीं होती है, भूलने की आवश्यकता होती है।

मर्यादा में चल फुल मार्क्स लेना है...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बुद्धि चलाने वाले का बुद्धियोग कभी लगेगा नहीं। बुद्धि को शान्त रखने व बुद्धि को अचल-अडोल रखने का समय दो। निश्चय का बल क्या होता है, उसका अनुभव करो। बलिहारी समय की और बाप की है, फिर बलिहारी हमारे भाग्य की है। समय और बाप दोनों हमारे साथ हैं। समय भी बहुत गया, अब थोड़ा रहा। थोड़े समय के अन्दर अनेक जन्मों के पुराने हिसाब-किताब समाप्त करना है। इस जन्म में कोई नया हिसाब नहीं बनाना है। बनाया तो पुराना खत्म नहीं होगा। अन्त घड़ी आ जायेगी तो हमारा हाल क्या होगा!

हर घड़ी को अन्तिम घड़ी मानना और जानना, ऐसी स्थिति हमारी बहुतकाल से बनी रहे तो दुनिया हमारा जो इंतज़ार कर रही है, वह इंतज़ार पूरा हो जायेगा। बाबा यही चाहता है जिनको मैंने इतनी पालना दी, पतित से पावन बनाया, तो उनके अन्दर इतना ईश्वरीय प्यार और नियम पर चलने की शक्ति हो जो अनेक आत्माओं को प्रेरणा मिले।

कई बच्चे अभी नये पैदा हुए हैं, उनके जिगर में है कि थोड़े समय में हम आगे बढ़ जायें। टाइम थोड़ा है आज जो किया कल काम आयेगा। आज मिस किया तो कल क्या करेंगे। कल की बात बीती, अच्छी कमाई नहीं की है तो आज कर लो, जो कल काम आयेगी। आज नहीं करेंगे, कल पर रखेंगे तो क्या होगा! बाबा समय का ध्यान खिंचवा रहा है समय पर ध्यान रखो। बाबा कहते हैं बच्चे, मुझ बाप की बातें ध्यान से सुनो, श्रीमत पर चलो। मन में और मतों को घुसने नहीं दो, अपनी मत भी धोखेबाज है। अपनी मत भी चलाते हैं तो श्रीमत पर चलना मुश्किल लगता है। दूसरा औरों की मत के जंगल में चले जाते हैं फिर जंगल में डर लगता है, वो फूल बन नहीं सकते, उनकी खुशबू फैल नहीं सकती।

बाबा देख रहा है कि मेरे कौन से बच्चे खुशबूदार फूल हैं! खुशबू बेहद में रहने वाले की फैलती है। टाली, पत्ते, कांटे अपना काम करेंगे उसके बगैर भी फूल कहाँ दिखेगा। टाली के बगैर भी गुलाब नहीं होता है, पकड़ेंगे कहाँ। परन्तु नज़र जाती है फूल के रंग और खुशबू पर। अंश मात्र भी बॉडी कान्सेस न हो। गुणवान की खुशबू नैचुरल होती है। गुलाब में बहुत गुण होते हैं। सूख भी जाता है तो गुलकन्द बनायेंगे तो भी काम का, गुलाब जल बनायेंगे तो भी काम का। ध्यान रहे कि मैं बाबा के काम लायक बच्चा बनूँ। हम कोई शिव की बारात में जाने वाले लूले-लंगड़े नहीं हैं। जो बारात में जाने वाले होंगे वो पीछे आयेंगे, साथ में जाने वाले हँसते-गाते जायेंगे। चेहरा सदा मुस्कुराता रहे, बाबा के गुण गाता रहे, कौन होगा जो स्वयं और बाबा को ही देखता है और किसी को नहीं देखता? हमारी पर्सनैलिटी में कोई इम्प्युरिटी न हो। कोई लगाव-झुकाव न हो। सदा ही पीसफुल और लवफुल हो, मर्यादा में चलने वाले, फुल मार्क्स लेने वाले हो।